वर्तमान काल में सिख सम्प्रदाय की प्रासंगिकता

-डॉ. विदुषी शर्मा

विनय-

भारत वर्ष में प्रत्येक धर्म का अपना एक विशिष्ट स्थान है। सिख धर्म अपने आप में बहुत कुछ समेटे हुए है। सिख धर्म को, उसके त्याग, बलिदान, समर्पण आदि को एक निश्चित शब्द सीमा में बांध पाना एक असंभव सा कार्य प्रतीत होता है। उनका सम्पूर्ण विश्व में इतना अधिक प्रचार-प्रसार है कि उस पर एक आलेख तो क्या बहुत सी पुस्तकों का प्रकाशन भी किया जा सकता है। इसलिए हम अग्रिम क्षमा याचना करते हैं कि यदि उक्त विषय पर कुछ त्रुटि रह जाए, तो विज्ञ पाठक उसे हृदय से स्वीकार करेंगे; क्योंकि समग्रता किसी भी विषय के लिए अंतिम परिणति है। परंतु यह मुझ अल्पज्ञ की परिधि से बाहर है। अतः

पाठक वृंद से यह अनुरोध है कि आप सभी इस आलेख को इस प्रकार ग्रहण करेंगे जैसे

"संत हंस गन गन्हहि पय, परिहरि वारि विकार।"

सिख धर्म का परिचय

सिख शब्द संस्कृत के शब्द 'शिष्य' से लिया गया है, जिसका अर्थ है जो सीखता है।" सिख किसी भी समय और किसी भी स्थान पर प्रार्थना कर सकते हैं और जल्दी उठक्कर स्नान करके दिन की शुरुआत भगवान के ध्यान से करते हैं।

1469 ईस्वी में पंजाब में जन्मे नानक देव जी ने गुरमत को खोजा और गुरमत की सिक्ख्याओं (शिक्षाओं) को देश-देशांतर में खुद-जा कर फैलाया था। सिख उन्हें अपना पहला गुरु मानते हैं। गुरमत का परचार (प्रचार-प्रसार) बाकि 9 गुरुओं ने किया। 10वें गुरु गोबिन्द सिंह जी ने ये प्रचार खालसा को सोंपा और 'ज्ञान-गुरु ग्रंथ साहिब' की शिक्षाओं पर अम्ल करने का उपदेश दिया। इसकी धार्मिक परंपराओं को गुरु गोबिन्द सिंह ने 30 मार्च, 1699 के दिन अंतिम रूप दिया। विभिन्न जातियों के लोगों ने सिख गुरुओं से दीक्षा ग्रहणकर खालसा पन्थ को सजाया। पाँच प्यारों ने फिर गुरु गोबिन्द सिंह को अमृत देकर खालसे में शामिल कर लिया। इस ऐतिहासिक घटना ने सिख पन्थ के तकरीबन 300 साल इतिहास को तरतीब किया। संत कबीर, धना, सधना, रामानंद, परमानंद, नामदेव इत्यादि, जिन की बाणी आदि ग्रंथ में दर्ज है, उन भक्तों को भी सिख सद्गुरुओं के सामान मानते हैं और उनकी सिक्ख्याओं पर अमल करने की कोशिश करते हैं। सिख एक ही ईश्वर को मानते हैं, जिसे वे एक-ओंकार कहते हैं। उनका मानना है कि ईश्वर अकाल और निरंकार है।

सिक्खों का भगवान के प्रति दृष्टिकोण

एक सिख का जीवन परमात्मा को याद करते हुए, ईमानदारी से गृहस्थ जीवन जीकर अपनी जीविका अर्जित करते हुए और जरूरतमंदो की मदद करते हुए व्यतीत होता है। उनके लिए उस परमात्मा के नाम का सुमिरन अन्य किसी भी कार्य से ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है। उनका मानना है कि इससे कई आत्माओं का उत्थान हुआ है और यह अशांत मन की इच्छा को शांत करता है। यह समदृष्टि प्रदान करता है।

गुरु की महिमा

सिख मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के मानव जीवन में एक गुरु होना चाहिए और बाकी सभी से ऊपर एक परमात्मा है। सिख धर्म की बुनियादी मान्यताओं को पवित्र ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब में व्यक्त किया गया है। पवित्र ग्रंथ के अनुसार सामान्य दार्शनिक अवधारणाएँ जैसे कर्म, धर्म, माया और मुक्ति का पालन किया जाता है। गुरुद्वारा में सामूहिक सिख पूजा का आयोजन किया जाता है।

गुरु ग्रन्थ साहिब, राग आसावरी, महला। के कुछ अंश-

साहिब मेरा एको है। एको है भाई एको है।

आपे रूप करे बहु भांती नानक बपुड़ा एव कह।। (पृ. 350)

जो तिन कीआ सो सचु थीआ, अमृत नाम सतगुरु दीआ।।

गुरु पुरे ते गति मति पाई।

(पृ. 352)

(पृ. 353)

बूडत जगु देखिआ तठ डरि भागे।

सतिगुरु राखे से बड़ भागे, नानक गुरु की चरणों लागे ।।

" मैं गुरु पूछिआ अपणा साचा बिचारी राम.

(पृ. 414)

(पृ. 439) उपरोक्त बाणी में, गुरु नानक जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं, कि साहिब (भगवान) केवल एक हैं. और मेरे गुरु जी ने नाम जाप का उपदेश दिया। उनके अनेक रूप हैं। वो ही सत्यपुरुष हैं, वो जिंदा महात्मा के रूप में भी आते हैं, वो ही एक बुनकर (धानक) के रूप में बैठे हुए है, एक साधारण व्यक्ति यानी भगत की भूमिका करने भी स्वयं आते हैं।

सिख धर्म (खालसा या सिक्खमत; पंजाबी: सिखी) 15वीं सदी में जिसकी शुरुआत गुरु नानक देव जी ने की थी। सिखों के धार्मिक ग्रन्थ श्री आदि ग्रंथ या गुरु ग्रंथ साहिब तथा दसम ग्रन्थ हैं। सिख धर्म में इनके धार्मिक स्थल को गुरुद्वारा कहते हैं। आमतौर पर सिखों के दस सतगुर माने जाते हैं, लेकिन सिखों के धार्मिक ग्रंथ में छः गुरुओं सहित तीस भगतों की बाणी है, जिन की सामान सिक्ख्याओं (शिक्षाओं) को सिख मार्ग पर चलने के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

सिख धर्म पूरी तरह से एकेश्वरवादी है अर्थात केवल एक ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं। गुरु नानक देव जी ने एकेश्वरवाद के विचार पर जोर देने के लिए, ओंकार शब्द के पहले "इक" का उपसर्ग दिया।

इक ओंकार सतनाम करतापुरख निरभउ. निर्वैर अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरु प्रसाद।

यहाँ केवल एक ही परम पुरुष है, शाश्वत सच, हमारा रचनहार, भय और दोष से रहित, अविनाशी, अजन्मा, स्वयंभू परमात्मा। जिसकी जानकारी कृपापात्र भगत को पूर्ण गुरु से प्राप्त होती है।

एकेश्वरवाद की उनकी सामान्य मान्यता के अनुसार; सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, और संहारकर्ता एक ही है। वे एक ही परमात्मा के नाम का ध्यान करते हैं और निस्वार्थ सेवा में मग्न रहते हैं। गुरु नानक देव जी का अनुसरण करते हुए हर सिख पगड़ी पहनता है। सिख अपनी पगड़ी को सिख होने की पहचान के रूप में संरक्षित करता है।

तीन कर्तव्य जिनका पालन सिक्खों द्वारा किया जाना चाहिये-प्रार्थना, कृत्य या कार्य और दान।

1. नाम जपनाः

हमेशा ईश्वर का सुमिरन करना।

2. कीरत करनाः

ईमानदारी से आजीविका अर्जित करना। चूँकि ईश्वर सत्य है, एक सिख ईमानदारी से जीवन जीना चाहता है। इसका अर्थ केवल अपराध से दूर रहना नहीं है बल्कि जुए, भीख, शराब व तंबाकू उद्योग में काम करने से भी बचना है।

3. वंड छकनाः

शाब्दिक रूप से इसका अर्थ है, दूसरों के साथ अपनी कमाई साझा करना अर्थात् दूसरों को दान देना और उनकी देखभाल करना। कोरोना काल में इस तीसरे कर्तव्य का पालन जो सिख समुदाय द्वारा पूरे विश्व भर में किया गया वह न केवल मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण रहा, अपितु वह आने वाले समय के लिए स्वर्णिम इतिहास का भी साक्षी है; जो हम सभी के लिये न केवल वंदनीय, अभिनन्दनीय है बल्कि संसार के सभी धर्मों के लिए अनुकरणीय भी है।

गुरु ग्रन्थ साहिब (आदि ग्रंथ) विचार और विशेषताएं भारत में सिख पंथ का अपना एक पवित्र एवं अनुपम स्थान है। सिखों के प्रथम गुरु, गुरुनानक देव जी सिख धर्म के प्रवर्तक हैं। उन्होंने अपने समय के भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, जर्जर रूढ़ियों और पाखण्डों को दूर करते हुए समाज मे समानता एवं मानवता एवम मानव धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ माना। उन्होंने प्रेम, सेवा, परिश्रम, परोपकार और भाईचारे की दृढ़ नीव पर सिख धर्म की स्थापना की। ताज्जुब नहीं कि एक उदारवादी दृष्टिकोण से गुरुनानक देव ने सभी धर्मों की अच्छाइयों को समाहित किया। उनका मुख्य उपदेश था कि ईश्वर एक है, उसी ने सबको बनाया है। हिन्दू-मुसलमान सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं और ईश्वर के लिए सभी समान हैं। उन्होंने यह भी बताया है कि ईश्वर सत्य है और मनुष्य को अच्छे कार्य करने चाहिए ताकि परमात्मा के दरबार में उसे लज्जित न होना पड़े। गुरुनानक देव जी ने अपने एक सबद में कहा है. 'कि पण्डित पोथी (शास्त्र) पढ़ते हैं, किन्तु विचार को नहीं बूझते। दूसरों को उपदेश देते हैं, इससे उनका माया का व्यापार चलता है। उनकी कथनी झूठी है, वे संसार में भटकते रहते हैं। इन्हें सबद के सार का कोई ज्ञान नहीं है। ये पण्डित तो वाद-विवाद में ही पड़े रहते हैं'।

"पण्डित वाचहि पोथिआ न बूझहि बीचार।

आन को मती दे चलहि माइआ का बामारू। कहनी झूठी जगु भवै रहणी सबहु सबदु सु सारू।"

(आदिग्रन्थ, पृ. 55) गुरु अर्जन देव तो यहाँ तक कहते हैं कि परमात्मा व्यापक है, जैसे सभी वनस्पतियों में आग समायी हुई है एवं दूध में घी समाया हुआ है। इसी तरह परमात्मा की ज्योति ऊँच-नीच सभी में व्याप्त है परमात्मा घट-घट में व्याप्त है-

"सगल वनस्पति महि बैसन्तरु सगल दूध महि घीआ।

ऊँच-नीच महि जोति समाणी, घटि-घटि माथउ जीआ"

(आदिग्रन्थ, पृ. 617) सिख धर्म को मजबूत और मर्यादासम्पन्न बनाने के लिए गुरु अर्जुन-देव ने आदि ग्रन्थ का संपादन करके एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक एवं शाश्वत कार्य किया। उन्होंने आदि ग्रन्थ में छः सिख गुरुओं के साथ 15 भक्तों, 11 भट्ट और 4 गुरुसिखों की बाणी को भी ससम्मान शामिल किया। इन पाँच गुरुओं के नाम हैं-गुरु नानक, गुरु अंगददेव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास और गुरु अर्जन देव और गुरु तेगबहादुर। शेख फरीद, जयदेव, त्रिलोचन, सधना, नामदेव, वेणी, रामानंद, कबीर साहेब, रविदास, पीपा, सैठा, धन्ना, भीखन, परमानन्द और सूरदास 15 संतों की बाणी को आदिग्रन्थ में संग्रहीत करके गुरुजी ने अपनी उदार मानवतावादी दृष्टि का परिचय दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने हरिबंस, बल्हा, मथुरा, गयन्द, नल्ह, भल्ल, सल्ह भिक्खा, कीरत, भाई मरदाना, सुन्द्रदास, राइ बलवंड एवं सत्ता डूम, कलसहार, जालप जैसे भक्तों और गुरुसिखों की बाणी को आदिग्रन्थ में स्थान देकर उन्हें उच्च स्थान प्रदान किया। यह अद्भुत कार्य करते समय गुरु अर्जुन देव के सामने धर्म जाति, क्षेत्र और भाषा की किसी सीमा ने अवरोध पैदा नहीं किया।

उन्हें मालूम था इन सभी गुरुओं, संतों एवं कवियों का सांस्कृतिक, वैचारिक एवं चिन्तनपरक आधार एक ही है। उल्लेखनीय है कि गुरु अर्जुनदेव ने जब आदिग्रन्थ का सम्पादन-कार्य 1604 ई0 में पूर्ण किया था तब उसमें पहले पाँच गुरुओं की वाणियाँ थीं। अपने देहावसान के पूर्व गुरु गोबिन्द सिंह ने सभी सिक्खों के आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए अपने पिता गुरु तेगबहादुर जी की बाणी को सम्मिलित किया। गुरु ग्रन्थ साहब और उनके सांसारिक दिशा-निर्देशन के लिए समूचे खालसा पंथ को 'गुरु पद पर आसीन कर दिया। उस समय से आदिग्रन्थ गुरु ग्रन्थ साहब के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

यह कोई श्रेय लेने-देने वाली बात नहीं है कि सिख गुरुओं का सहज, सरल, सादा और स्वाभाविक जीवन जिन मूल्यों पर आधारित को सिख मार्ग पर चलने के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

सिख धर्म पूरी तरह से एकेश्वरवादी है अर्थात केवल एक ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं। गुरु नानक देव जी ने एकेश्वरवाद के विचार पर जोर देने के लिए, ओंकार शब्द के पहले "इक" का उपसर्ग दिया।

इक ओंकार सतनाम करतापुरख निरभउ. निर्वैर अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरु प्रसाद।

यहाँ केवल एक ही परम पुरुष है, शाश्वत सच, हमारा रचनहार, भय और दोष से रहित, अविनाशी, अजन्मा, स्वयंभू परमात्मा। जिसकी जानकारी कृपापात्र भगत को पूर्ण गुरु से प्राप्त होती है।

एकेश्वरवाद की उनकी सामान्य मान्यता के अनुसार; सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, और संहारकर्ता एक ही है। वे एक ही परमात्मा के नाम का ध्यान करते हैं और निस्वार्थ सेवा में मग्न रहते हैं। गुरु नानक देव जी का अनुसरण करते हुए हर सिख पगड़ी पहनता है। सिख अपनी पगड़ी को सिख होने की पहचान के रूप में संरक्षित करता है।

तीन कर्तव्य जिनका पालन सिक्खों द्वारा किया जाना चाहिये-प्रार्थना, कृत्य या कार्य और दान।

1. नाम जपनाः

हमेशा ईश्वर का सुमिरन करना।

2. कीरत करनाः

ईमानदारी से आजीविका अर्जित करना। चूँकि ईश्वर सत्य है, एक सिख ईमानदारी से जीवन जीना चाहता है। इसका अर्थ केवल अपराध से दूर रहना नहीं है बल्कि जुए, भीख, शराब व तंबाकू उद्योग में काम करने से भी बचना है।

3. वंड छकनाः

शाब्दिक रूप से इसका अर्थ है, दूसरों के साथ अपनी कमाई

साझा करना अर्थात् दूसरों को दान देना और उनकी देखभाल करना। कोरोना काल में इस तीसरे कर्तव्य का पालन जो सिख समुदाय द्वारा पूरे विश्व भर में किया गया वह न केवल मानवता के लिए महत्त्वपूर्ण रहा, अपितु वह आने वाले समय के लिए स्वर्णिम इतिहास का भी साक्षी है; जो हम सभी के लिये न केवल वंदनीय, अभिनन्दनीय है बल्कि संसार के सभी धर्मों के लिए अनुकरणीय भी है।

गुरु ग्रन्थ साहिब (आदि ग्रंथ) विचार और विशेषताएं भारत में सिख पंथ का अपना एक पवित्र एवं अनुपम स्थान है। सिखों के प्रथम गुरु, गुरुनानक देव जी सिख धर्म के प्रवर्तक हैं। उन्होंने अपने समय के भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, जर्जर रूढ़ियों और पाखण्डों को दूर करते हुए समाज मे समानता एवं मानवता एवम मानव धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ माना। उन्होंने प्रेम, सेवा, परिश्रम, परोपकार और भाईचारे की दृढ़ नीव पर सिख धर्म की स्थापना की। ताज्जुब नहीं कि एक उदारवादी दृष्टिकोण से गुरुनानक देव ने सभी धर्मों की अच्छाइयों को समाहित किया। उनका मुख्य उपदेश था कि ईश्वर एक है, उसी ने सबको बनाया है। हिन्दू-मुसलमान सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं और ईश्वर के लिए सभी समान हैं। उन्होंने यह भी बताया है कि ईश्वर सत्य है और मनुष्य को अच्छे कार्य करने चाहिए ताकि परमात्मा के दरबार में उसे लज्जित न होना पड़े। गुरुनानक देव जी ने अपने एक सबद में कहा है. 'कि पण्डित पोथी (शास्त्र) पढ़ते हैं, किन्तु विचार को नहीं बूझते। दूसरों को उपदेश देते हैं, इससे उनका माया का व्यापार चलता है। उनकी कथनी झूठी है, वे संसार में भटकते रहते हैं। इन्हें सबद के सार का कोई ज्ञान नहीं है। ये पण्डित तो वाद-विवाद में ही पड़े रहते हैं'।

"पण्डित वाचहि पोथिआ न बूझहि बीचार।

आन को मती दे चलहि माइआ का बामारू। कहनी झूठी जगु भवै रहणी सबहु सबदु सु सारू।"

(आदिग्रन्थ, पृ. 55) गुरु अर्जन देव तो यहाँ तक कहते हैं कि परमात्मा व्यापक है, जैसे सभी वनस्पतियों में आग समायी हुई है एवं दूध में घी समाया हुआ है। इसी तरह परमात्मा की ज्योति ऊँच-नीच सभी में व्याप्त है परमात्मा घट-घट में व्याप्त है-

"सगल वनस्पति महि बैसन्तरु सगल दूध महि घीआ।

ऊँच-नीच महि जोति समाणी, घटि-घटि माथउ जीआ"

(आदिग्रन्थ, पृ. 617) सिख धर्म को मजबूत और मर्यादासम्पन्न बनाने के लिए गुरु अर्जुन-देव ने आदि ग्रन्थ का संपादन करके एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक एवं शाश्वत कार्य किया। उन्होंने आदि ग्रन्थ में छः सिख गुरुओं के साथ 15 भक्तों, 11 भट्ट और 4 गुरुसिखों की बाणी को भी ससम्मान शामिल किया। इन पाँच गुरुओं के नाम हैं-गुरु नानक, गुरु अंगददेव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास और गुरु अर्जन देव और गुरु तेगबहादुर। शेख फरीद, जयदेव, त्रिलोचन, सधना, नामदेव, वेणी, रामानंद, कबीर साहेब, रविदास, पीपा, सैठा, धन्ना, भीखन, परमानन्द और सूरदास 15 संतों की बाणी को आदिग्रन्थ में संग्रहीत करके गुरुजी ने अपनी उदार मानवतावादी दृष्टि का परिचय दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने हरिबंस, बल्हा, मथुरा, गयन्द, नल्ह, भल्ल,

सल्ह भिक्खा, कीरत, भाई मरदाना, सुन्द्रदास, राइ बलवंड एवं सत्ता डूम, कलसहार, जालप जैसे भक्तों और गुरुसिखों की बाणी को आदिग्रन्थ में स्थान देकर उन्हें उच्च स्थान प्रदान किया। यह अद्भुत कार्य करते समय गुरु अर्जुन देव के सामने धर्म जाति, क्षेत्र और भाषा की किसी सीमा ने अवरोध पैदा नहीं किया।

उन्हें मालूम था इन सभी गुरुओं, संतों एवं कवियों का सांस्कृतिक, वैचारिक एवं चिन्तनपरक आधार एक ही है। उल्लेखनीय है कि गुरु अर्जुनदेव ने जब आदिग्रन्थ का सम्पादन-कार्य 1604 ई0 में पूर्ण किया था तब उसमें पहले पाँच गुरुओं की वाणियाँ थीं। अपने देहावसान के पूर्व गुरु गोबिन्द सिंह ने सभी सिक्खों के आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए अपने पिता गुरु तेगबहादुर जी की बाणी को सम्मिलित किया। गुरु ग्रन्थ साहब और उनके सांसारिक दिशा-निर्देशन के लिए समूचे खालसा पंथ को 'गुरु पद पर आसीन कर दिया। उस समय से आदिग्रन्थ गुरु ग्रन्थ साहब के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

यह कोई श्रेय लेने-देने वाली बात नहीं है कि सिख गुरुओं का सहज, सरल, सादा और स्वाभाविक जीवन जिन मूल्यों पर आधारित था, निश्चय ही उन मूल्यों को उन्होंने परंपरागत भारतीय चेतना से ग्रहण किया था। देश, काल और परिस्थितियों की माँग के अनुसार उन्होंने अपने व्यक्तित्व को ढालकर तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन को गहरे में प्रभावित किया था। सिख गुरुओं ने अपने समय के धर्म और समाज-व्यवस्था को प्रभावित किया था। सिख गुरुओं ने अपने समय के धर्म और समाज-व्यवस्था को एक नई दिशा दी। उन्होंने भक्ति, ज्ञान, उपासना, अध्यात्म एवं दर्शन को एक संकीर्ण दायरे से निकालकर समाज को उस तबके के बीच पहुँचा दिया, जो इससे पूर्णतः वंचित थे। इससे लोगों का आत्मबोध जागा और उनमें एक नई दृष्टि एवं जागृति पनपी, वे स्वानुभूत अनुभव को मान्यता देने लगे। इस प्रकार निर्गुण निराकार परम शक्ति का प्रवाह प्रखर एवं त्वरित रूप से प्राप्त हुआ।

सिख धर्म में गुरुओं के लिए पर्याय

गुरु नानक-नम्रता

गुरु अंगद-आज्ञाकारिता

गुरु अमर दास-समानता

गुरु राम दास-सेवा

गुरु अर्जन-आत्म बलिदान

गुरु हरगोबिंद-न्याय

गुरु हर राय-दया

गुरु हरकृष्ण-पवित्रता

गुरु तेगबहादुर-शांति

गुरु गोबिंद सिंह-शाही साहस

सिख धर्म की सार्वकालिक शिक्षाएं

सिख मत की शुरुआत ही "एक" से होती है। सिखों के धर्म ग्रंथ में "एक" की ही व्याख्या हैं। एक को निरंकार, पारब्रहम आदिक गुणवाचक नामों से जाना जाता हैं। निरंकार का स्वरूप श्री गुरुग्रंथ साहिब के शुरुआत में बताया है जिसको आम भाषा में 'मूल मन्त्र' कहते हैं।

1. ऑकार, सतिनामु, करतापुरखु, निरभऊ, निरवैरु, अकालमूर्त, अजूनी, सैभं गुरु प्रसादि। जपु। आदि सचु जुगादि सचु है भी सचु नानक होसी भी सचु। पर मूल मन्त्र समाप्त होता है।

तकरीबन सभी धर्म इसी "एक" की आराधना करते हैं, लेकिन "एक" की विभिन्न अवस्थाओं का जिक्र व व्याख्या श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दी गई है वो अपने आप में निराली है।

सिख धर्म की एक अन्य विशिष्टता यह है कि सिख गुरुओं ने मनुष्य को उद्यम करते हुए जीवन जीने, कमाते हुए सुख प्राप्त करने और ध्यान करते हुए प्रभु की प्राप्ति करने की बात कही।

उनका मानना था कि परिश्रम करनेवाला व्यक्ति सभी चिन्ताओं से मुक्त रहता है। गुरु नानक ने तो यहाँ तक कहा है कि जो व्यक्ति मेहनत करके कमाता है और उसमें कुछ दान-पुण्य करता है, वही सही मार्ग को पहचानता है।

सिख धर्म के अनुसार इंसान खुद कुछ कर ही नहीं सकता। इंसान सिर्फ सोचने तक सीमित है, करता वही है जो "हुक्म" में है, चाहे वो किसी गरीब को दान दे रहा हो चाहे वो किसी को जान से मार रहा हो। यही बात श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी के शुरू में ही दृढ़ करवा दी थी :

"हुक्मे अंदर सब है बाहर हुक्म न कोए।"

जो होता है हुकम में ही होता है। हुक्म से बाहर कुछ नहीं होता। इसी लिए गुरमत में पाप पुण्य को नहीं मन जाता। अगर इंसान कोई क्रिया करता है तो वो अंतर आत्मा के साथ आवाज मिला कर करे। यही कारण है की गुरमत कर्म कांड के विरुद्ध है। श्री गुरु नानक देव जी ने अपने समय के भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, अंधविश्वासों, जर्जर रूढ़ियों और पाखण्डों को दूर करते हुए जन-साधारण को धर्म के ठेकेदारों, पण्डों, पीरों आदि के चंगुल से मुक्त करने की कोशिश की।

कोरोना काल मे सिख धर्म की प्रासंगिकता

पंजाबी संस्कृति राष्ट्रीयता का मेरुदण्ड है। इसके प्राण में एकत्व है. इसके रक्त में सहानुभूति, सहयोग, करुणा और मानव-प्रेम है। पंजाबी संस्कृति आदमी से जोड़ती है और उसकी पहचान बनाती है। विश्व के

किसी कोने में घूमता-फिरता पंजाबी स्वयं में से एक लघु पंजाब का प्रतिरूप है। प्रत्येक सिख की अपनी स्वतंत्र चेतना है, जो जीवन-संबंधी समस्याओं को अपने ही प्रकाश में सुलझाने के उद्देश्य से गम्भीर रूप से विचार करती आई है। सिख गुरुओं का इतिहास उठाकर देख लीजिए, उन्होंने साम्राज्यवादी अवधारणा कतई नहीं बनाई, उल्टे सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक सामंजस्य के माध्यम से मानवतावादी संसार की दृष्टि ही करते रहे।

अगर हम इतिहास की ओर रुख करें तो देखेंगे कि सिख धर्मगुरुओं ने कैसे बलिदान देकर दूसरों की रक्षा की। हथियार अगर उठाये भी तो निहत्थे और कमजोर लोगों पर नहीं, बल्कि उन जालिम लोगों पर जो इंसानियत भूल चुके थे। जब भी इस देश को, समाज को जरूरत हुई, सिख समाज के लोग आगे आए हैं। सिख गुरुओं द्वारा प्रारंभ की गई 'लंगर' (मुफ्त भोजन) "वण्ड छकना" यानी बाँटकर खाना नामक प्रथा विश्वबन्धुत्व, मानव-प्रेम, समानता एवं उदारता की अन्यत्र न पाई जाने वाली एक 'बेमिसाल' मिसाल है। करोना काल में जहाँ पूरा विश्व इस महामारी से त्रस्त था। हर जगह बहुत तरह की परेशानियाँ थी। वही सभी ने यथासंभव, यथाशक्ति एक दूसरे की मदद की जिससे मानव धर्म को प्रबलता मिली। परंतु सिख समुदाय ने इस काल में जो कार्य किया वह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। करोना काल में भोजन आवास, दवाइयाँ इत्यादि की मदद जितनी पूरे विश्व में सिख समुदाय के द्वारा प्रदान की गई वह किसी और समुदाय के द्वारा संभव नहीं हो पाया। यह तक कि जब लोग अपने ही परिजनों के शव का अंतिम संस्कार करने से हिचकिचाते थे तो वह अत्यंत कठिन कर्तव्य भी सिखों ने ही अपनी जान जोखिम में डालकर, सहर्ष निभाया। सिख समुदाय हमेशा से ही मानव जाति की मदद करता रहा है। विश्वप्रसिद्ध अमृतसर के स्वर्ण मंदिर गुरुद्वारे में 24 घंटे लंगर की व्यवस्था अपने आप में एक अनोखी प्रथा है जो बहुत लंबे समय से लगातार चलती ही आ रही है। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर गुरुद्वारा पूरे विश्व में सबसे बड़ा गुरुद्वारा है और यह 24 घंटे खुला रहता है। इसकी इन्हीं विशेषताओं के कारण ही यह गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। विश्व भर में कोई भी ऐसा गुरुद्वारा नहीं होगा जहाँ पर लंगर आदि की व्यवस्था ना हो। सिख धर्म बिना किसी भेदभाव के सभी को लंगर प्रसाद वितरित करते हैं तथा उनका सेवा भाव देखते ही बनता है। प्रत्येक गुरुद्वारे में 'जोड़ा घर' जहाँ पर आपकी जूते चप्पलों को न केवल तरतीब से रखा जाता है बल्कि उनकी पॉलिश भी की जाती है और उन्हें साफ किया जाता है। ऐसा सेवाभाव शायद ही कहीं और देखने को मिलता हो।

यहाँ पर लंगर व्यवस्था में सभी एक पंक्ति में जमीन पर बैठकर एक साथ खाना खाते हैं जहाँ किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं किया जाता। चाहे वह वह व्यक्ति किसी भी बड़ी पोस्ट पर हो या वह कोई भिखारी हो। सभी एक ही पंक्ति में बैठकर एक साथ, एक जैसा खाना खाते हैं। यह अपने आप में अनूठी पहल है जिसकी शुरुआत गुरु नानक देव जी द्वारा की गई थी और जिसका निर्वहन अभी तक सिख समुदाय द्वारा बहुत ही श्रद्धा और निष्ठा के साथ किए जा रहा है।

इसी सिख समुदाय द्वारा कोरोना काल के पहले लॉक डाउन में स्थानीय असहाय व जरूरतमंदों के साथ-साथ बाहर से आए प्रवासी मजदूरों को लगातार रात-दिन भोजन कराया गया। जिला प्रशासन को भी जहाँ

भोजन उपलब्ध कराने में दिक्कत हुई वहाँ पर सिख समुदाय नहीं किसी भी व्यक्ति को भूखा नहीं रहने दिया।

दूसरी कोरोना लहर के कहर में लोगों को भोजन से भी ज्यादा जिस चीज की जरूरत थी वह थी ऑक्सीजन। ऑक्सीजन की कमी से लोगों की जान तक जाने लगी, प्रशासन के पास मांग के मुताबिक ऑक्सीजन नहीं थी। तब फिर से एकबार सिख धर्म इस संकट का सामना करने के लिए सामने आया। निजी प्रयास से लाखों रुपये की ऑक्सीजन सिलिंडर, ऑक्सीमीटर, रेगुलेटर रांची व अन्य शहरों से मंगवा कर जरूरतमंदों को उपलब्ध कराया। कुल मिलाकर इस संकट की घड़ी में जो काम सिख समुदाय द्वारा किया गया वह निश्चित ही स्तुत्य है, प्रणम्य है।

इस प्रकार करोना काल या इस वैश्विक महामारी से अभी भी पूरा विश्व पूरी तरह से आजाद नहीं हुआ है और अभी हम कोरोना की तीसरी लहर के आने को लेकर भयभीत ही हैं। लॉकडाउन और करोना काल में जिस प्रकार इतने मुश्किल समय हम स्वयं को, अपने परिवार को सुरक्षित रख पाए हैं उसमें ईश्वर की कृपा के साथ-साथ सरकारी मदद तो है ही। परंतु उससे भी अधिक जिस निष्ठा और आत्मीयता के साथ सिख धर्म ने पूरे विश्व में जो कार्य किया है वह निश्चय ही इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित किया जाएगा। मुसीबत के समय जो काम आए महत्त्वपूर्ण वही है। यह कौम ऐसी है जो हमेशा जरूरत पड़ने पर सामने खड़ी होती है।

मैं सादर प्रणाम करती हूँ उन सभी गुरुओं को जिन्होंने संसार को एक नई दिशा प्रदान की कि किसी भी मुसीबत में डटकर सामने खड़े होना है और पूरी मानवता का उपकार करना होता है।

"सवा लाख से एक लड़ाऊँ,

चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाऊँ,

तबै गुरु गोबिंद सिंह नाम कहाऊँ"

जरूरत के समय जो काम आए वही महत्त्वपूर्ण होता है।

कोरोना काल मे सबसे अधिक जिसके द्वारा मानव धर्म के लिए, मानवता के लिए कार्य किया गया वह है सिख धर्म।

आशा है ये समुदाय ऐसे ही अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर बना रहेगा।

इतिशुभम अस्तु।

वाहे गुरु जी का खालसा वाहे गुरु जी की फतेह।

सतनाम श्री वाहे गुरु।

संदर्भ

1. गुरुग्रंथ साहिब, आदिग्रंथ